प्राकथन

आधुनिक युग विज्ञापन का युग है। इसके बिना आधुनिक व्यापार एवं उद्योग की ऊर्जाति सम्भव नहीं है। आज कल तो प्रत्येक वस्तु का विज्ञापन किया जाता है। सुबह आँख खोलने से लेकर रात्रि के बिस्तर पर लेटने तक विज्ञापन ही दिखाई देता है। आजकल देश के किसी भी कोने में चले जाये, विज्ञापन निरंतर रूप से पीछा करता दिखाई देता है। अतः यह कहा जा सकता है कि आज का सम्पूर्ण युग ही विज्ञापन का युग है।

वर्तमान समय में हमारे देश में विज्ञापन जिस प्रकार उज्ज्वल हुआ है, वैसा पहले कभी नहीं था और ऐसा इसलिए हुआ कि हमारे देश की प्रजातात्मक अर्थव्यवस्था काफी सूक्ष्म है, क्योंकि इसी के कारण व्यक्तियों की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के प्रयास किये जाते हैं जिससे कुछ क्रय शक्ति बढ़ती है, क्योंकि जब मांग में वृद्धि होती है तो इसके फलस्वरूप उत्पादन में भी वृद्धि होती है।

अतः भारत में विज्ञापन के बढ़ते हुए महत्त्व को देखकर प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत "पूर्वी उत्तर प्रदेश में विज्ञापन का प्रभाव (इलेक्ट्रॉनिक उपभोक्ता पदार्थों के सम्बन्ध में)" से सम्बन्धित सूचनाओं को एकजीत किया गया है। 'पूर्वी उत्तर प्रदेश' जो भारत में जनसंख्या की वृद्धि से सच्चाईतम क्षेत्रों में से एक है और आर्थिक वृद्धि से पिछड़ा हुआ है। यहाँ की आर्थिक स्थिति मुख्य रूप से वृद्धि से जुड़ी है और उद्योगों का न्यूनतम विकास इस क्षेत्र में हुआ है। अतः आर्थिक असमानता इस क्षेत्र में आत्मविश्वास निर्भर है जिसका स्पष्ट प्रभाव विभिन्न वस्तुओं के उपभोक्ताओं पर दिखाई देता है।

वर्तमान समय में इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं के उपभोक्ताओं का प्रभाव इस क्षेत्र में भी दिखाई देने लगा है, फलस्वरूप जिस अनुपात में जनसंख्या निवास करती है, उस अनुपात में उपभोग का प्रतिशत आत्मविश्वास है। इसका मुख्य कारण लोगों की आर्थिक स्थिति का कमजोर होना है। फिर भी इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं के अत्यधिक उपयोग का श्रेय विज्ञापन को ही जाता है, ऐसा न्यूनतम विकास है।
वर्तमान शोध अध्ययन छ: अध्ययनों में विवाहित है। प्रथम अध्याय के अन्तर्गत विज्ञापन का परिचय, अर्थ, विशेषता, उद्देश्य, उपयोगिता, आलोचना, सीमा एवं संस्थाओं को दर्शाया गया है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत विज्ञापन संगठन, विज्ञापन नियोजन एवं विज्ञापन बजट का उल्लेख किया गया है।

तृतीय अध्याय में कौन—कौन से इलेक्ट्रानिक पदार्थ हैं और उन पर विज्ञापन का क्या प्रभाव है, इसका वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में शोधार्थी द्वारा सर्वक्षण की रूपरेखा एवं उनका प्रस्तुतीकरण किया गया है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत आकर्षण का विश्लेषण एवं व्याख्या किया गया है तथा

षष्ठ अध्याय के अन्तर्गत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष एवं निष्कर्ष के आधार पर उपर्युक्त सुझाव का वर्णन किया गया है।

युवे इस शोध प्रबंध को प्रस्तुत करते समय जो खुशी का अनुभव हो रहा है, उसके लिए मैं सर्वप्रथम श्रेष्ठ नियामक श्रद्धा साँस प्राप्त डॉ। उमा शंकर सिंह एवं डॉ। आलोक सिंह प्रवक्ता वाणिज्य विभाग, श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोमी, जौनपुर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके कुशल निर्देशन, सहयोग एवं अनुमूल्य सुझाव ने शोध प्रबंध को वर्तमान रूप प्रदान किया। वास्तव में उनके द्वारा निर्देशन के प्रतिदिन स्वरूप देने के लिए तथा वर्तमान शब्द तक नहीं है। मैं उनके अनुग्रह से इस जन्म में मुक्त नहीं हो सकता हूँ।

मैं आदरणीय डा। प्रवीण कुमार सिंह प्राचार्य श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोमी, जौनपुर का आभारी हूँ, जिन्होंने अपने यहाँ से शोध—प्रबंध पूर्ण करने में हर प्रकार की सहायता उपलब्ध करायी है।

मैं, श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोमी, जौनपुर के शिरोमणि स्वाधीन प्रताप सिंह पूर्व प्राचार्य (श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोमी, जौनपुर) एवं पूर्व
कुलपति (दीर्घ बहादुर सिंह पूर्वविद्यालय, जोनपुर) जिनकी स्मृतियों ही शेष हैं, को सत्ता सत्ता प्रणाम एवं नमन करता हूँ।

मैं इस अवसर पर अपने मार्गदर्शक, प्रेमक तथा सभी प्रकार के कार्यों में सहायक श्री पृथ्वीराज सिंह एवं श्री रविन्द्रनाथ सिंह का सादर समरण करता हूँ। उनकी सत्ता प्रेरणा ने इस महत्वपूर्ण कार्य के सम्बन्ध में प्रमाणशाली भूमिका निभाई है।

इस शौर्य प्रबंध के अभिन्यास में मैं वाणिज्य विभाग के आदरणीय गुरुजनों डा० रुद्र प्रताप सिंह (विभागाध्यक्ष), डा० महेंद्र प्रताप सिंह, डा० ब्रजेंद्र कुमार सिंह, श्री बसन्त लाल यादव एवं डा० रमाशंकर सिंह (अर्थशास्त्र विभाग) का आभारी हूँ, जिनकी सुमेध्य और आशीर्वाद से इस कार्य को पूर्ण करने में हमें सफलता मिली है। मैं तिलकशारी महाविद्यालय के आदरणीय गुरुजन डा० को० सिंह, डा० पी०सी० सरस, डा० ए० राय तथा डा० मीरा सिंह, वाणिज्य विभाग उदयप्रताप स्वायत्तशासी महाविद्यालय, वाराणसी को सादर नमन करता हूँ, जिन्होंने अमूल्य युद्ध देकर शौर्य ग्राम की उपयोगिता बढाने में सहायता की।

मैं केंद्रीय प्रशासन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सजन्य सिंह एवं श्री गणेश राव स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिनका सत्ता सहयोग प्राप्त हुआ। मैं अपने अनुज ब्रजेश्वर कुमार सिंह को भी धन्यवाद देता हूँ, जिसने मेरे कार्य में सहयोग किया।

मैं विपिन कुमार त्रिपाठी को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने तकनीकी ज्ञान का उपयोग करते हुए प्रस्तुत शौर्य-ग्राम के टंकन को सफल बनाया।

मातृज्ञान एवं पितृज्ञान से उत्तीर्ण होना सम्भव नहीं है। इनके प्रति अपनी वचनबद्धता एवं निष्ठा ही व्यक्त की जा सकती है। मेरा यह शौर्य ग्राम उन्हीं को समर्पित है।

मेरो त्यो कुमार सिंह
सन्तोष कुमार सिंह